Administering herb of wondrous Name, cured disease of transmigration.
Removing doubt and delusion, conquered death lamentation.

With wish-fulfilling stone of Lord's Name, tension disintegrated.
Which gave contentment of mind, restlessness eliminated.

The Saint who initiates with Holy Name, I offer my dedication.
Holding arm who steadies me, tells Ram is destination.

By gaining Holy company, the path automatically unfolds.
Mysteriously dyes in devotion deeply, increasing yearning manifold.

सत्यानन्द

* (एक बार श्री महाराज जी (परम पूजनीय श्री स्वामी जी महाराज) ने कहा,''मेरी सम्पूर्ण आत्म–कथा भक्ति–प्रकाश में है। जो जानना चाहे उसका पाठ करे।'' जो कुछ मेरे जीवन की कमाई और सन्देश है वह सब मैंने पुस्तकों में पहले से ही भर दिया है। वह ही मेरा सन्देश है।' (*प्रवचन पीयूष,* पृष्ठ 481)) ■

मुझे अपने रंग में रंग दो माँ,
मुझे भक्ति रंग में रंग दो माँ।

मैं तो तेरा हूँ तेरा हूँ तेरा हूँ राम,
तू तो मेरा है मेरा है मेरा है राम।

संस्मरण

परम पूजनीय श्री स्वामी जी महाराज के संस्मरण

एक बार स्वामी जी महाराज अचानक बहुत बीमार हुए। साधकों ने स्वामी जी के श्री मुख से नाम की महिमा सुन रखी थी। 1 करोड़ जाप का संकल्प ले लिया। स्वामी जी शैय्या ग्रस्त थे। उनके जाप पर पधारने की आशा बिल्कुल नहीं थी। पर पधारे, कहने लगे,''मैं आपके जाप का प्रभाव दिखाने आया हूँ।'' तत्पश्चात् कई वर्ष और स्वस्थ जीवन बिताया।

(परम पूजनीय महाराज जी की डॉयरी से)

'मैं क्या माँगूं माँ से'?

प्रेम

नरेन्द्र* कालिज में पढ़ता था। वह परमहंस श्री रामकृष्ण जी महाराज के पास जाया करता था। उसके पिता वकील थे, अपनी कमाई से ज्यादा खर्चा करते थे। ऐसे हुआ, पिता स्वर्ग सिधार गए और कमाने वाला कोई था नहीं। घर की हालत इतनी खराब थी कि किराया देने के लिए पैसा नहीं था। मकान मालिक ने कई बार उनका सामान बाहर निकाल कर फैंका और कहा, किराया तुम देते नहीं हो, रहते क्यों हो यहाँ पर, कहीं और जा कर रहो जहाँ किराया न हो।

इन हालात से माँ ने दुखी होकर नरेन्द्र से कहा, तू रामकृष्ण परमहंस जी के पास रोज़ जाता है, कहते हैं वो जो कुछ चाहे करवा सकते हैं। तू क्यों नहीं उनसे कहता कि हमारे घर के हालात सुधरें। बार–बार कहने से दुखी होकर नरेन्द्र जब परमहंस जी के पास आया। उन्हें कहने लगा कि हमारे घर के हालात ऐसे हैं, आप हमारे लिए कुछ कीजिए। परमहंस जी ने कहा, ध्यान में बैठते हैं, तू भी मेरे साथ बैठ जा। तू माँ से माँग लेना, जो तेरा जी चाहे। ध्यान में बैठ गए, जब उठे, परमहंस जी ने पूछा, तूने माँ से माँगा? नरेन्द्र कहने लगा, माँगें उससे जिसको पता न हो। माँ को नहीं पता कि हमारे घर के हालात क्या हैं? मैं क्या माँगूं माँ से?

परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए दूसरों के लिए। अपने लिए परमेश्वर आप ही सब कुछ करता है, आप ही देने वाला है। सुख शान्ति और शक्ति देता है। परन्तु जिन्हें विश्वास नहीं होता, वो कहते हैं कि पता नहीं परमेश्वर हमारी सुनता है कि नहीं सुनता, परमेश्वर सबकी सुनते हैं। सब के अंग संग हैं, हम ही पीछे हट जाते हैं, परमेश्वर तो सब पर कृपा करते हैं। परमेश्वर से अपने लिए कभी कोई न माँगे, दूसरों के लिए माँगें, जो दुखी हो उनके लिए माँगें, जो रोगी हो, किसी के हालात खराब हैं, उसके लिए आप माँगोगे तो उसका भी कल्याण होगा और आपका भी कल्याण होगा।

परमेश्वर श्री राम,
हम तेरी चरण शरण में हैं,
तू सब पर कृपा कर,
कृपा कर, कृपा कर, कृपा कर !

(परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज जी के श्रीमुख से) ■

* स्वामी विवेकानन्द

गुरु-कृपा

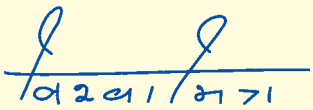

संत बाह्य रुप में तो सबको एक साधारण व्यक्ति ही दिखते हैं, परन्तु एक बात उन सबके लिए निश्चित है, वह यह – कि उनके पास अस्थिर मन जैसी कोई वस्तु नहीं। संत तो बालवत्–सरल एवं स्वैच्छिक होते हैं। चूंकि वे भेदभाव से परे होते हैं तथा अपनी समस्त कामनाओं का विध्वंस कर चुके हैं, अतः उनका हृदय विशाल होता है तथा सबके प्रति प्रेम से प्लावित होता है, सबके प्रति स्नेही होता है। उनके लिए कोई भी अपरिचित नहीं क्योंकि सभी तो उस प्रियतम के ही रुप हैं।

संत की कृपा, जिसे आपने गुरु स्वीकारा है, साधक की आध्यात्मिक उन्नति के लिए अनिवार्य है। प्रश्न यह है कि साधक अपने आपको कृपा प्राप्त करने का अधिकारी कैसे बनाए? मुख्य गुण जो साधक कृपा ग्रहण करने हेतु विकसित करे–वह है उस परमेश्वर की इच्छा के प्रति पूर्ण आत्म–स्वीकृति, जो उसके भीतर आसीन है। दैवी इच्छा के प्रति साधक का आत्म–समर्पण निर्भर करेगा उसकी संसार में बाह्य जीवन के प्रति अभिवृत्ति पर। ऐसे जीना और आचरण करना जिससे गुरु अपने शिष्य पर अति प्रसन्न हो, निश्चित शर्त है जिस द्वारा गुरु कृपा अवश्यंभावी होती है। संत किसका प्रतीक है? धरती पर मानवता एवं समस्त प्राणियों के प्रति उसकी दृष्टि कैसी होती है? उसका हृदय और बुद्धि कैसे काम करते हैं? संत दिव्यता का साकार रुप है। उसकी दृष्टि सार्वभौमिक है। उसका हृदय सभी प्राणियों के प्रति प्रेम तथा कल्याण से परिपूर्ण है। उसकी बुद्धि अविनाशी प्रज्ञा द्वारा प्रबुद्ध है। जैसे ही साधक (जिज्ञासु) ऐसे संत के सादृश्य विकसित होता है, वह संत के वैभव शक्ति एवं कृपा का उत्तराधिकारी बन जाता है।

एक सच्चा साधक अपने जीवन को गुरु के उपदेशों के अनुरुप ढालने से उसे प्रसन्न करने के लिए नित्य तत्पर रहता है। संत ऐसे शिष्य की प्रगति को देख कर अत्यधिक आनन्दित होता है कि उसका हृदय उत्तरोत्तर उदार, विशाल होता जा रहा है तथा वह सभी प्राणियों के प्रति समभाव एवं समदृष्टि है। एक सामान्य भूल जो साधक के द्वारा प्रायः हो जाती है वह है उसकी यह सोच कि मात्र संत के व्यक्तित्व की स्तुति करने से तथा मानव जाति के अन्य सभी सदस्यों तथा संसार के सभी प्राणियों में उसकी (गुरु की) अभिव्यक्ति की अवहेलना करके अर्थात् इन सबको गुरु का द्योतक अवलोकन न करके, वह उच्चतर आध्यात्मिक जीवन के योग्य बन सकेगा। आध्यात्मिक साधक के लिए इस प्रकार की अभिवृत्ति की अपेक्षा, अन्य कुछ भी उसकी प्रगति के लिए हानिकारक नहीं है। एक संत ने अपने प्रेरणावर्द्धक गीत में विशिष्टतया ऐसा कहा है,'' जब आप अपने अभिमान को एक ओर धकेल देते हैं, तो अपने गुरु को सर्वत्र निहारते हैं।'' संत के व्यक्तित्व के साथ चिपके रहना उसका अत्यधिक सम्मान करने से और तब अपने संगी साथियों के प्रति घृणा एवं प्रतिकूल व्यवहार द्वारा उनकी उपेक्षा करना, आप पर कृपा–अवतरण के लिए सहाई नहीं होगा। जितना अधिक आप

अस्वस्थ, विपद्ग्रस्त और व्यथित मानवता के प्रति दयालु, सहायक, एवं करुणावान बनेंगे, उतने ही उस महान सत्य के समीपतर पहुँचते हैं जो आपके भीतर ही विराजमान है। केवल तभी संत वास्तव में प्रसन्न होता है तथा अपना ज्ञान, प्रकाश एवं अपनी कृपा आप पर बरसाता है।

एक और तथ्य जो साधक को भूलना नहीं चाहिए कि गुरु जिसे उसने जीवन में अपना एकाकी–पथ प्रदर्शक एवं स्वामी स्वीकार किया है, वह अपने ही हृदय का इष्ट देव है, यद्यपि आरम्भ में गुरु उसे बाहर से आने वाला व्यक्ति दिखाई देता है। गुरु सर्वव्यापक सत्य है वास्तविकता है, तत्व है – सभी साधकों का आन्तरिक प्रबोधक एवं प्रेरक। यदि कोई साधक सतत् साधना द्वारा मन को लांघने में प्रयत्नशील है, उस आवरण को विच्छिन्न करने में तत्पर है जो उसे तत्व से पृथक् करता है और तब अपने भीतर अन्तरंग में प्रवेश करता है, तभी उसे अनुभूति होगी कि अन्तस्थ में आसीन गुरु ही उसका शासक (नियन्त्रक) प्रोत्साहक, संरक्षक एवं सर्वस्व है। अपने शिष्य के लिए गुरु का व्यादेश है,' मुझे अपने भीतर खोजो (ढूँढो) एवं पाओ। और तब मुझे हर व्यक्ति एवं प्रत्येक वस्तु में निहारो अर्थात् व्यक्ति एवं वस्तु भी गुरु ही है। मैं सभी प्राणियों के हृदय में आसीन हूँ। उनसे प्रेम करना तथा उनकी सेवा करने का अभिप्राय है, : मुझे प्रेम करना तथा मेरी सेवा करना। ऐसा कभी न सोचो कि अपने हृदय को कोमल बनाए बिना, अपनी बुद्धि को प्रबुद्ध किए बिना तथा संसार के कल्याण के हेतु जीवन बलिदान किए बिना, आप कभी भी मेरी कृपा को ग्रहण कर सकोगे अर्थात् यह सब किए बिना गुरु कृपा सम्भव नहीं।''

सभी परिस्थितियों में, चाहे वे कितनी भी कठिन एवं जटिल हों, आप उस अन्तर्यामी से अचूक निर्देश एवं दिशा प्राप्त कर सकते हैं जो आपके भीतर विराजमान है। उनकी आवाज़ हर पग पर स्पष्टतया सुनी जा सकती है। वे आपका पथ प्रदर्शन करेंगे यदि आप अपने आपको उनके हाथों में सौंप देते हो तथा अनवरत स्मरण द्वारा उसके साथ अपने मन को एकस्वर कर लेते हो। आप कहीं भी हैं तथा जिस अवस्था में भी आप हैं, आप उन्हें सहायतार्थ पुकार सकते हैं और आपका मार्ग साफ(स्पष्ट) हो जाता है तथा संरक्षण निश्चित हो जाता है।

इस लेख का उद्देश्य है इस तथ्य पर बल देना कि एक आध्यात्मिक साधक का वास्तविक एवं दिव्य उदार जीवन तक उत्थान तभी सम्भव हो सकता है जब वह अपने जीवन का व्यवहार, आचरण इस प्रकार अनुकूल बनाता है जिस द्वारा आध्यात्मिक गुरु–स्वामी प्रसन्न हो तथा वह गुरु ही उसके जीवन का आन्तरिक प्रेरक एवं मार्गदर्शक है।

गुरु वह है जो साधक की आध्यात्मिक भूख को तृप्त करता (मिटाता) है। यहां तर्क और निजी विचारों (रायों) का स्थान नहीं। अन्यथा अविश्वास तथा संशय उस पर प्रहार करेंगे तथा उसके विश्वास को नष्ट कर देंगे। गुरु–सेवा का और गुरु–कृपा ग्रहण करने का ढंग एक ही है कि हम गुरु के निर्देशानुसार चलें तथा हमारा आचरण ऐसा हो जिससे गुरुदेव प्रसन्न हों। वह केवल एक ही आदेश देता है कि राम नाम जपो, और यदि आप वैसे ही करते हैं, जैसे बताया गया है, आप गुरु की सर्वोत्तम सेवा करेंगे। भगवन्नाम की आवृत्ति से आपका हृदय पवित्र होता है और आप सबकी निष्काम सेवा करते हैं जो दुखी हैं, व्यथित हैं। यही है वास्तविक गुरु–सेवा।

(आनन्द आश्रम, केरल के स्वामी श्री रामदास जी महाराज का लेख जिसका अनुवाद परम पूजनीय श्री महाराज जी ने किया है।)

परम पूजनीय श्री महाराज जी के पत्रों के अंश

A Guru can only show the way, and guide, walk you have to yourself. Lord is the sole saviour. Pray whole heartedly & He shall help you in all matters & every-where. May Lord bless. Jai Jai Ram & all love.

गुरु अवश्य मार्ग दिखा सकते हैं और मार्गदर्शन भी, पर चलना आपको स्वयं है। तारने वाला एक मात्र प्रभु है। पूरी तन्मयता से आराधना कीजिए और वह हमेशा और हर परिस्थिति में आपकी मदद जरुर करेगा। प्रभु आप पर कृपा करें। जय जय राम।

Let me explain true Guru-sewa. The way you behave with me so you behave with all is Guru pooja/sewa liked by a true guru. Be good & do good. Loving Jai Jai Ram.

गुरु सेवा क्या है, मैं समझाता हूँ। गुरु सेवा अर्थात्, जैसा व्यवहार आप मेरे साथ करते हैं वैसा ही दूसरों के साथ करें। सच्चे गुरु को यही गुरु पूजा/ सेवा पसन्द है। अच्छा बनें और अच्छा करें। सप्रेम जय जय राम।

Dhayan is taught during diksha. Please do meditation daily. There is only one Guru i.e. the Lord Himself - Param Guru. All others are His Forms. Worship Swami Ji Maharaj as His embodiment. Loving Jai Jai Ram.

दीक्षा के दौरान ध्यान सिखाया जाता है। कृपया रोज़ ध्यान में बैठें। गुरु सिर्फ एक है, और वह हैं, प्रभु स्वयं – परम गुरु। अन्य सभी उनके स्वरुप हैं। स्वामी जी महाराज की प्रभु रुप में आराधना करें। सप्रेम जय जय राम।

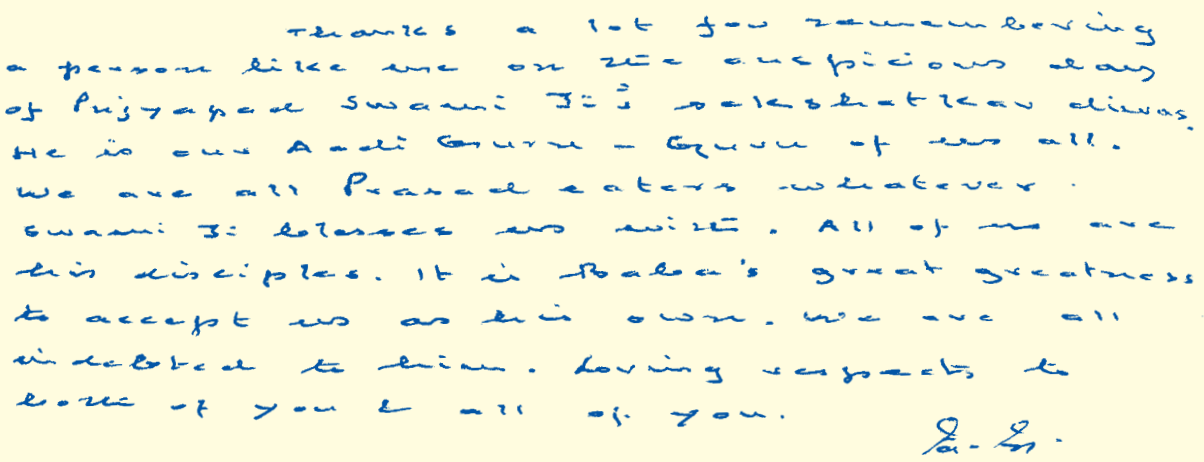

Thanks a lot for remembering a person like me on the auspicious day of Pujyapad Swami Ji's sakshatkar diwas. He is our Aadi Guru – Guru of us all. We are all Prasad eaters whatever Swami Ji blesses us with. All of us are his disciples. It is Baba's great greatness to accept us as his own. We are all indebted to him. Loving respects to both of you & all of you.

स्वामी जी के साक्षात्कार दिवस के पावन अवसर पर मुझ जैसे व्यक्ति को याद करने के लिए बहुत–बहुत धन्यवाद। वह हमारे आदि गुरु हैं– हम सबके गुरु। हम सब उनके शिष्य हैं और अपनी अनुकम्पा का प्रसाद देकर उन्होंने हमें धन्य किया है। यह बाबा की विशाल महानता है कि उन्होंने हम सबको स्वीकारा और अपनाया। हम सब उनके कृतज्ञ हैं। आप दोनों और आप सभी को सप्रेम आदर।

अनुभूतियाँ

'राम असम्भव को सम्भव कर सकता है'

जो भी मैं लिखने जा रही हूँ, यह मुझे महसूस होता है कि यह गुरुजनों की अकारण, अहैतुकी कृपा है। मैं 45 वर्ष की हूँ। 25 मई 2015 को बताया गया कि मुझे सिर और गले का तीसरी स्टेज का कैंसर है। एक के बाद एक टैस्ट, फिर रेडिएशन और कीमोथैरिपी 4 जून से शुरु हो गई। सात हफतों के रेडियेशन और साप्ताहिक कीमोथैरिपी के बाद, जब भी मैं श्रीरामशरणम् दर्शन करने आई, तो मुझे लगा श्री स्वामी जी महाराज ने मुझे कहा कि उन्हें सब पता है। मेरा यह विश्वास सुदृढ़ हुआ कि यदि हमारा विश्वास अटल हो तो राम असम्भव को सम्भव कर सकता है।

अगस्त के दूसरे हफते में प्रातः 3 और 4 बजे के बीच, मैं ध्यान में बैठी थी। मुझे ऐसा महसूस हुआ कि परम पूजनीय श्री महाराज जी हनुमान जी की तरह उड़ते हुए आए और मेरे चेहरे के पास से कुछ निकाल कर ले गए। तब मुझे कुछ समझ नहीं आया, पर बहुत हल्का महसूस हुआ। उसके बाद डॉक्टर ने मुझे तीन महीने का गैप दिया for preventive strong chemotherapy to start from November first week. लेकिन यह आश्चर्यजनक घटना घटित हुई, कि डाक्टर ने मेरा उपचार बंद कर दिया। स्कैन के बाद, मुझे रोग–मुक्त घोषित कर दिया। उनके अनुसार, मैं पूरी तरह ठीक हूँ। तब मुझे समझ में आया, कि श्री महाराज जी की कृपा से और राम नाम की साधना से मेरे गले की बीमारी पूरी तरह ठीक हो गई। मैं बिल्कुल स्वस्थ हूँ और अब रोग–मुक्त जीवन व्यतीत कर रही हूँ। श्री महाराज जी हम सब पर कृपा करें और हमें गुरुजनों में विश्वास एवं राम नाम की भक्ति का दान दें।

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम

मार्च से जून 2016

साधना सत्संग, खुले सत्संग एवं नाम दीक्षा का विवरण

- **कोल्हापुर**, महाराष्ट्र, में 6 मार्च को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन का आयोजन हुआ, जिसमें 46 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **नागदा**, मध्यप्रदेश, में 9 मार्च को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसमें 785 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **बोलासा**, मध्यप्रदेश, में 10 मार्च को नवनिर्मित श्रीरामशरणम् का उद्घाटन हुआ जिसके पश्चात् 8089 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा गंहण की।
- **सरदारशहर**, राजस्थान, में 19 मार्च को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसमें 1470 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **कठुआ**, जम्मू एवं कश्मीर, में 20 मार्च को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 178 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हरदा**, मध्यप्रदेश, में 20 मार्च को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 275 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **मण्डी**, हिमाचल प्रदेश, में 10 अप्रेल को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 178 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **शुक्रताल**, उत्तरप्रदेश, में 17 अप्रेल को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसमें 113 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **रोपड़**, पंजाब, में 17 अप्रेल को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसमें 34 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हरिद्वार** में 18 से 23 अप्रेल तक पंचरात्री साधना सत्संग लगा। 18 अप्रेल को 12 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **पुडुचरी** में 22 अप्रेल को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसमें 192 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हरिद्वार** में 26 से 29 अप्रेल तक झाबुआ के साधकों के लिए तीन रात्री साधना सत्संग लगा।
- **लम्बासा**, फीजी, में 7 व 8 मई को खुला सत्संग लगा। सुवा में 14 व 15 मई को खुला सत्संग लगा। फीजी में बा, लम्बासा, सुवा, लौऊटोका व नाडी में नाम दीक्षा का आयोजन हुआ और 113 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **कण्डाघाट**, हिमाचल प्रदेश, में 22 मई को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 21 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **फरीदाबाद**, हरियाणा, में 25 मई को श्री रामशरणम् के उद्घाटन की वर्षगांठ के उपलक्ष्य में विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसमें 78 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- श्रीराशरणम् **दिल्ली** में मार्च, अप्रेल व मई में 195 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **मनाली**, हिमाचल प्रदेश, में 14 से 16 जून को तीन दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 70 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **बिदर्भा**, डोडा, जम्मू कश्मीर, में 16 जून को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 103 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

निर्माणाधीन श्रीरामशरणम् की प्रगति

- **बीकानेर,** राजस्थान, में श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य लगभग पूरा हो गया है और उद्घाटन 10 जुलाई रविवार को होगा।
- **आदिवासी गाँव बांसगहन** (अब्दुल्लागंज), नज़दीक भोपाल, मध्यप्रदेश में श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य आरम्भ हो गया है। ■

Sadhna Satsang (July to December 2016)		
Haridwar	30 June to 3rd July	Thursday to Sunday
Haridwar	14 to 19 July	Thursday to Tuesday
Haridwar (Ramayani)	2 to 11 October	Sunday to Tuesday
Haridwar	11 to 14 November	Friday to Monday
Haridwar	25 to 28 November	Friday to Monday

Open Satsang (July to December 2016)		
Delhi	27 to 29 July	Wednesday to Friday
Kathmandu	30th July	Saturday
Rohtak	13 to 14 August	Saturday and Sunday
Rattangarh	27 to 28 August	Saturday and Sunday
Rewari	3 to 4 September	Saturday and Sunday
Bhareri	11th September	Sunday
Gurdaspur	16 to 18 September	Friday to Sunday
Sydney	24 to 25 September	Saturday and Sunday
Jammu	14 to 16 October	Friday to Sunday
Pathankot	22 to 23 Ocotber	Saturday and Sunday
Hissar	5 to 6 November	Saturday and Sunday
Fazalpur, Kapurthala	19 to 20 November	Saturday and Sunday
Hoshangabad	8 and 9 December	Thursday and Friday
Bhiwani	10 to 11 December	Saturday and Sunday
Surat	17 to 18 December	Saturday and Sunday
Sujanpur	24 to 25 December	Saturday and Sunday

Naam Deeksha in Other Centers (July to December 2016)		
30 July	Saturday	Kathmandu
14 August	Sunday	Rehti, Madhya Pradesh
04 September	Sunday	Rewari
11 September	Sunday	Bhareri
18 September	Sunday	Gurdaspur
25 September	Sunday	Jalandhar
25 September	Sunday	Sydney
16 October	Sunday	Jammu
23 October	Sunday	Pathankot
06 November	Sunday	Hissar
20 November	Sunday	Fazalpur, Kapurthala
09 December	Friday	Hoshangabad
11 December	Sunday	Bhiwani
18 December	Sunday	Surat
25 December	Sunday	Sujanpur

Naam Deeksha in Delhi, Shree Ram Sharnam (July to December 2016)	
19 July	Tuesday 4 pm
21 August	Sunday 10:30 am
18 September	Sunday 10:30 am
30 October	Sunday 11 am
25 December	Sunday 11 am

Purnima (July to December 2016)	
19 July	Tuesday
18 August	Thursday
16 September	Friday
16 October	Sunday
14 November	Monday
13 December	Tuesday

Crossword

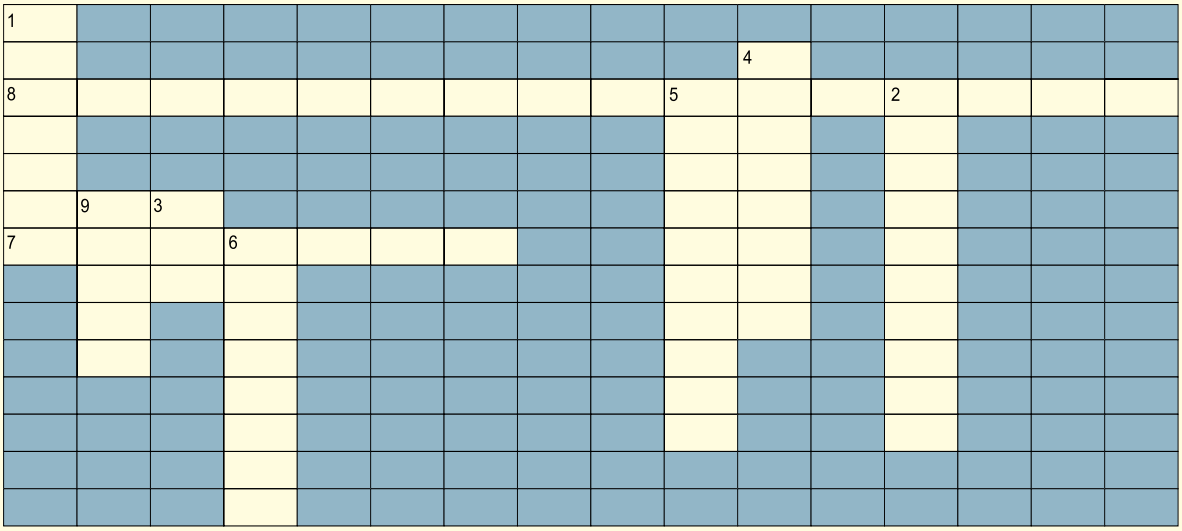

TOP TO DOWN

1. On whose birthday is Guru Purnima celebrated.
2. Name the chapter in which Param Pujyaniya Swami Ji Maharaj has written about the glory of Guru.
3. Who is Param Guru according to Param Pujyaniya Swami Ji Maharaj.
4. In which city was the first Sadhna Satsang held under the direction of Param Pujyaniya Swami Ji Maharaj.
5. In which city was Param Pujyaniya Swami Ji Maharaj born.
6. In which city was Param Pujyaniya Prem Ji Maharaj born.
9. From which institution did Param Pujyaniya Maharaj Ji do his doctorate

LEFT TO RIGHT

7. In which city was Param Pujyaniya Maharaj Ji born.
8. Where did Param Pujyaniya Prem Ji Maharaj work.

ANSWERS

Top to Down

1. Ved Vyas
2. Guru Mahima
3. Ram
4. Haridwar
5. Rawalpindi
6. Layalpur
9. AIIMS

Left to Right

7. Sialkot
8. Delhi Central Govt

यदि आप 'सत्य साहित्य' की इस प्रति को नहीं रखना चाहते,
तो कृपया इसे अपने स्थानीय केन्द्र या निकटतम श्रीरामशरणम् को लौटा दें।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यनन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर–IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित
एवं रेव स्कैनस प्राइवेट लिमिटेड, ए–27, नारायणा औद्योगिक ऐरिया, फेज़ 2, नई दिल्ली 110028 से मुद्रित, संपादकः मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

Publisher and printer Shri Anil Dewan for Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust, 8-A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024 and
printed at Rave Scans Private Limited, A-27, Naraina Industrial Area, Phase 2, New Delhi 110028. Editors: Medha Malik Kudaisya and Malvika Rai.

©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली

ईमेल: shreeramsharnam@hotmail.com
वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org

RNI No. "Applied for".